रॉबर्ट वानॉय, व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 11

© 2011, रॉबर्ट वानॉय, पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

विभिन्न विद्वान और व्यवस्थाविवरण के लिए विभिन्न तिथियां

1. तीन विद्वान व्यवस्थाविवरण के लिए निर्वासन के बाद की तारीख का समर्थन कर रहे हैं । केनेट: हाग्गै/जकर्याह के समय में लिखी गई व्यवस्थाविवरण

तीन विचारों वाले तीन नाम हैं जिन पर हम चर्चा करना चाहते हैं, और पहला है आरएच केनेट। यदि आप अपनी ग्रंथ सूची, पृष्ठ दो को देखते हैं, तो आप आरएच केनेट *ड्यूटेरोनॉमी और डिकालॉग*, कैम्ब्रिज प्रेस देखते हैं। केनेट ने वह पुस्तक 1920 में लिखी थी। उन्होंने हाग्गै और जकर्याह के समय में व्यवस्थाविवरण के लिए एक तारीख प्रस्तावित की और कहा कि यह हिजकिय्याह या मनश्शे या योशिय्याह के अधीन नहीं लिखी जा सकती थी। उन्होंने जिन कारणों की वकालत की, उनमें से कुछ थे, उन्होंने कहा, हिजकिय्याह, मनश्शे या योशिय्याह के समय में पूरे इज़राइल को हर साल एक अभयारण्य में इकट्ठा करना अव्यावहारिक होता। यदि यह आवश्यकता थी कि सभी इज़राइल केंद्रीय अभयारण्य में जाएं, पूजा के केंद्रीकरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, वार्षिक दावत के लिए एक अभयारण्य, उनका कहना है कि यह उन पहले के समय में अव्यावहारिक होता। हालाँकि, निर्वासन से लौटने के बाद हाग्गै और जकर्याह के समय में, जब यह अपेक्षाकृत छोटा समुदाय था, यह काम करने योग्य हो सकता था, उन्होंने कहा।

वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण 13 के कानूनों को लागू करने के किसी भी प्रयास का मतलब गृह युद्ध होता।" व्यवस्थाविवरण 13 झूठे उपासकों से संबंधित है, और पहले इज़राइल के इतिहास में वह जो कह रहा है, वह यह है कि मूर्तिपूजा में इतने सारे लोग लगे हुए थे, कि केंद्रीय पूजा को लागू करने का प्रयास करना अव्यावहारिक होता। आप ध्यान दें, व्यवस्थाविवरण 13 कहता है, "यदि कोई भविष्यद्वक्ता वा स्वप्न के द्वारा भविष्यवाणी करने वाला तुम्हारे बीच प्रकट हो और तुम्हें कोई चिन्ह या चमत्कार बताए, और जिस चिन्ह या

चमत्कार की चर्चा हुई हो, और भविष्यद्वक्ता कहे, 'आओ हम दूसरे देवताओं का अनुकरण करो और हम उनकी आराधना करें,' तुम्हें उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले की बातें नहीं सुननी चाहिए।' श्लोक पाँच कहता है, "उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाले को अवश्य मार डाला जाना चाहिए।" छंद छह कहता है, "यदि तुम्हारा अपना भाई, या तुम्हारा बेटा या बेटी, या वह पत्नी जिसे तुम प्रेम करते हो, या तुम्हारा सबसे घनिष्ठ मित्र तुम्हें गुप्त रूप से फुसलाकर कहता है, 'आओ, हम जाकर दूसरे देवताओं की उपासना करें ,' तो उन पर दया न करना। उन्हें मत बख्शो या उन्हें ढाल मत दो. तुम्हें उन्हें निश्चित रूप से मौत की सज़ा देनी होगी।"

इसलिए, वह कहता है, झूठी पूजा और झूठे भविष्यवक्ताओं के लिए सख्त दंड, जिसे हिजकिय्याह, मनश्शे या योशिय्याह के समय में लागू नहीं किया जा सकता था।

अध्याय 17, जो राजा का कानून है, अध्याय का उत्तरार्द्ध भाग, केनेट कहते हैं, "जब कोई राजा सिंहासन पर था तब नहीं लिखा जा सकता था। लेकिन केवल, 'जब कोई संभावना हो कि कोई चुना जाएगा।" दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसे समय की तरह दिखता है जब राजत्व स्थापित किया जाना है, उस समय की तरह नहीं जब राजत्व पहले ही स्थापित हो चुका हो। यदि आप हिजकिय्याह, मनश्शे या योशिय्याह के समय में थे, तो यह पहले से ही स्थापित है। यदि आप निर्वासन के बाद की अवधि में जाते हैं जब वे गवर्नर के साथ वापस आते हैं, तो वे वापसी की उम्मीद कर रहे होते हैं, शायद राजत्व में, इसलिए उन्हें लगता है कि यह शायद वहां बेहतर होगा। वह कहते हैं, "कोई राजा नहीं है, लेकिन संभावना है कि कोई एक चुना जाएगा। और यह कहना अजीब है, इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि जो राजा समुदाय द्वारा चुना जा सकता है वह आम तौर पर इज़राइली जन्म का होना चाहिए। अब राजा का कानून, व्यवस्थाविवरण 17:15 में कहता है, "किसी परदेशी को, जो इस्राएल का भाई न हो, अपने ऊपर अधिकार न करना।"

तो यही कारण थे कि केनेट ने बताया कि क्यों व्यवस्थाविवरण की तारीख 600 के दशक में फिट नहीं बैठती है और वह इसे बाद में, निर्वासन के बाद के समय में धकेलना

चाहता है। मुझे लगता है कि केनेट जैसे दृष्टिकोण का तात्कालिक प्रश्न यह है: निर्वासन के बाद के समय में क्यों जाएं; राजशाही-पूर्व काल में क्यों नहीं जाते? वह उसकी आपत्तियों को संतुष्ट करता है; और, निस्संदेह, यह व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के दावों के अनुरूप भी है।

बी। होल्शर: योशिय्याह की कानून की पुस्तक व्यवस्थाविवरण नहीं थी [निर्वासन के बाद की तारीख] ठीक है "डी" जी होल्शर है, जो आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ दो पर भी है। यह एक जर्मन कृति है, *द कंपोजिशन, ओरिजिन ऑफ ड्यूटेरोनॉमी*, 1922। होल्शर की थीसिस थी कि II किंग्स 22 के विस्तृत विवरण के कारण, आप II किंग्स 22 की ऐतिहासिकता से इनकार नहीं कर सकते। लेकिन उन्होंने इस बात से इनकार किया कि जोशिया की कानून की किताब की पहचान की जा सकती है। व्यवस्थाविवरण के साथ . होल्शर के विचार में, ड्यूटेरोनॉमी ने निर्वासन के बाद इज़राइल की बहाली के लिए एक कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने महसूस किया कि यह यरूशलेम में पुरोहित मंडल से आया है और इसका समय लगभग 500 ईसा पूर्व का है

उनके तर्कों में ये थे: उन्होंने कहा कि यह पूर्व-निर्वासन की तुलना में निर्वासन के बाद के समय में बेहतर फिट बैठता है, जैसा कि केनेट कह रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि व्यवस्थाविवरण 16, जिसके लिए पूरे परिवार को यरूशलेम जाना आवश्यक है, निर्वासन से पहले के समय में निष्क्रिय था। और होल्शर के बारे में बोलते हुए जे. थॉम्पसन के उद्धरण को उद्धृत करते हुए, थॉम्पसन कहते हैं, "उन्होंने प्रस्तावित किया कि व्यवस्थाविवरण सुधार के लिए एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि निर्वासन के बाद अवास्तविक सपने देखने वालों की इच्छाधारी सोच थी। उन्होंने यह भी कहा कि यह संभावना नहीं है कि योशिय्याह व्यवस्थाविवरण 17:14 को देश के कानून के रूप में घोषित करेगा जब इसने राजा के अधिकारों को प्रतिबंधित कर दिया। दूसरे शब्दों में, व्यवस्थाविवरण 17 में राजा के कानून ने एक राजा जो कर सकता है उस पर कुछ सीमाएँ लगा दीं। वह कह रहा है, कोई राजा अपने हाथ क्यों बांधेगा?

इसके अलावा, उन्होंने पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व मिस्र में पाए गए एलिफेंटाइन पपीरी से देखा कि ऐसा लगता है कि वहां का यहूदी समुदाय पूजा के केंद्रीकरण के विचार से अनभिज्ञ था क्योंकि वहां उनका अपना पूजा केंद्र था। दरअसल, वे यरूशलेम के लोगों से मिस्र के उस क्षेत्र में मंदिर के निर्माण में सहायता करने के लिए कह रहे थे। उनका विचार यह है कि व्यवस्थाविवरण, अपने केंद्रीकरण पर जोर के साथ, अभी तक प्रख्यापित नहीं किया गया था क्योंकि एलिफेंटाइन मिस्र के लोग व्यवस्थाविवरण की मांगों से अनभिज्ञ लग रहे थे। यह पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में था, इसलिए होल्शर ने निर्वासन के बाद की अवधि में ड्यूटेरोनॉमी को काफी देर से रखा। उनका दावा है कि तथ्य यह है कि उनके पास वहां एक पूजा स्थल था और यहां तक कि वे मंदिर के निर्माण के लिए धन की भीख मांग रहे थे, इससे पता चलता है कि उन्हें केंद्रीकरण विश्वास के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसलिए, वह कह रहा है कि व्यवस्थाविवरण अस्तित्व में ही नहीं था। बेशक, आप समान रूप से कह सकते हैं कि व्यवस्थाविवरण मोज़ेक था और ये लोग लंबे समय से इसे भूल गए थे या इसे अनदेखा कर दिया था।

व्यवस्थाविवरण में सभी पुरुषों के बारे में कहा गया है, इसलिए ऐसा नहीं है कि हर किसी को यरूशलेम जाना था, बल्कि घरों के मुखिया, या शायद एक कुल के मुखिया, जो तब अधिक प्रतिनिधि प्रकार का दृश्य देगा।

सी। ड्यूटेरोनॉमी की निर्वासन के बाद की तारीख पर पैटन की आपत्तियां [621 ईसा पूर्व जोसियन तारीख का समर्थन करती हैं] ठीक है, यह सामान्य तौर पर, संक्षेप में, होल्शर का विचार है। उनके विचार पर पैटन ने उस लेख में हमला किया था जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था। यह आपकी ग्रंथ सूची का पृष्ठ तीन है, *जेबीएल*, 1928 में, "द केस फॉर द पोस्ट-एक्सिलिक ओरिजिन ऑफ ड्यूटेरोनॉमी।" वहां वह होल्शर के मामले की जांच कर रहे हैं। पैटन जो करता है, वह पारंपरिक वेलहाउसियन दृष्टिकोण के लिए तर्क है। और पैटन कई तर्कों के साथ ऐसा करता है, होल्शर के विरुद्ध वेलहौसियन दृष्टिकोण के लिए

बहस करता है।

वह होल्शर की आलोचना करते हैं। सबसे पहले उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि द्वितीय राजा 22 में योशिय्याह द्वारा उठाए गए कदम व्यवस्थाविवरण की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं। दूसरे शब्दों में, यदि आप द्वितीय राजा 22 और 23 में योशिय्याह ने अपने सुधार में जो किया उसकी तुलना करें, तो पैटन का तर्क है कि वे चीजें व्यवस्थाविवरण की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं। मुझे इससे कोई खास दिक्कत नहीं है. मुझे लगता है कि आप व्यवस्थाविवरण और योशिय्याह ने जो किया, उसके बीच एक निश्चित संबंध बना सकते हैं।

दूसरा, पैटन कहते हैं, "II किंग्स 22 की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है।" फिर, यह दिलचस्प है. मैं उसे फिर से उद्धृत करूंगा, "किंग्स के संपादक ने डेविड और सोलोमन के समय के बारे में, शायद हिजकिय्याह के समय के बारे में, अपने दिमाग से जो लिखा, वह साहित्यिक आविष्कार हो सकता है, लेकिन योशिय्याह के दिन भी ऐसे ही थे।" अपने समकालीनों की स्मृति में इतना करीब और इतना स्पष्ट कि उसके लिए पूरी कहानी गढ़ना संभव नहीं था।" तो फिर से, आप देखिए, आपको वह दिलचस्प मोड़ मिलता है जहां वह जोशिया की कहानी की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के लिए बहस कर रहा है, जबकि साथ ही यह स्वीकार कर रहा है कि डेविड की कहानी और सोलोमन की कहानी, शायद हिजकिय्याह की कहानी भी मनगढ़ंत थी। होल्शर ने इसी तरह कहा कि II किंग्स 22 आम तौर पर विश्वसनीय था, लेकिन इसमें बाद में कुछ जोड़ दिए गए।

मेरा अगला बिंदु यह है कि पैटन ने होल्शर के इस दृष्टिकोण की आलोचना की कि II किंग्स 23:8ए, 9-10, 15, 21-27 बाद में 500 ईसा पूर्व के बाद जोड़े गए थे, इसलिए होल्शर कहेंगे कि ये मार्ग आम तौर पर विश्वसनीय हैं, लेकिन ये बाद में जोड़े गए थे, और पैटन ने उन बाद के परिवर्धनों की जानकारी देने के लिए उनकी आलोचना की। पैटन कहते हैं, “होल्शर इन अध्यायों में कई छंदों को हटाकर, किंग्स की पुस्तक के सबसे नवीनतम संपादक, रेडेक्टर डी2 द्वारा प्रक्षेप के रूप में, आदि से शुरुआत करता है। 23:8ए और 9-10

को अस्वीकार करने के लिए होल्शर का मुख्य तर्क यह है कि वे संदर्भ को बाधित करते हैं।" मैं इसके विवरण में नहीं जाऊंगा, लेकिन आपको उन दोनों के बीच वह बहस मिल जाएगी।

मैं यहां केवल यह बताना चाहता हूं कि होल्शर का विचार था कि योशिय्याह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने पूजा को इतना केंद्रीकृत किया जितना कि उसे शुद्ध करने वाला व्यक्ति था, और इसके लिए व्यवस्थाविवरण के किसी ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। व्यवस्थाविवरण वह है जो पूजा को केंद्रीकृत करता है, और यह योशिय्याह के सुधार की तुलना में बाद में है। होल्शर के विचार में यह पूजा का शुद्धिकरण था, पूजा का केंद्रीकरण नहीं। जिस तरह से यिर्मयाह के साथ व्यवहार किया गया और लोगों के बीच उसके संदेश के प्रति प्रतिक्रिया की कमी से संकेत मिलता है कि योशिय्याह के सुधार में जो कुछ भी हुआ, वह ऐसा कुछ नहीं था जिसने पूरे देश को बदल दिया और जारी रखा। इसमें कुछ हद तक रहस्य है कि यिर्मयाह, भविष्यवक्ता का योशिय्याह के सुधार से वास्तव में क्या संबंध है। योशिय्याह के सुधार के संबंध में राजाओं में यिर्मयाह का उल्लेख नहीं है, और यिर्मयाह में योशिय्याह का उल्लेख नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि यहां कोई समस्या है; यह सिर्फ इतना है कि हम ठीक से नहीं जानते कि यिर्मयाह उन कुछ सुधारों के कार्यान्वयन में कैसे शामिल था या उसकी भूमिका क्या थी। इसे संबोधित ही नहीं किया गया है। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि सुधार इतना महत्व, गहराई और अवधि का था। लोगों को प्रभु के पास लौटने के लिए यिर्मयाह की चेतावनियाँ और उसकी पुकार अनसुनी कर दी गई। उन्होंने उसे लगभग मार ही डाला।

होल्शर के संदर्भ में, योशिय्याह के समय में मंदिर में कौन सा स्क्रॉल पाया गया था? मुझे यकीन नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि वह सोचेगा कि यह शायद वाचा संहिता, या पेंटाटेच का कोई अन्य हिस्सा था।

जहां तक एलिफेंटाइन के उस तर्क की बात है, कि उन्हें पूजा के इस केंद्रीकरण के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, पैटन का कहना है कि इससे पता चलता है कि जोशिया के सुधार के बाद, नाजायज सांस्कृतिक प्रथाएं तेजी से लौट आईं। यह तर्क कि जोशिया के

समय में पूजा का केंद्रीकरण अव्यावहारिक था, पैटन ने यह कहकर प्रतिवाद किया कि निर्वासन के बाद के काल में भी यह अव्यावहारिक था। तो, अब वह बस यही कहता है कि इससे कोई मदद नहीं मिलती। पैटन कहते हैं, "यहां तक कि व्यवस्थाविवरण के अव्यवहारिक आदर्शवाद को स्वीकार करते हुए भी, कोई यह पूछने से बच नहीं सकता कि क्या निर्वासन के बाद के समय में यह आदर्शवाद निर्वासन से पहले के समय की तुलना में अधिक अव्यावहारिक था।"

डी। बेरी: ड्यूटेरोनॉमी पोस्ट-एक्सिलिक - होलीनेस कोडे ड्यूटेरोनॉमी की बाद की पुस्तक को प्रभावित करता है

जीआर बेरी, यह आपकी शीट पर "सी" है, कहते हैं, "होल्शर ने पुराने नियम में कहीं और जोशिया की कानून की किताब की खोज करने का कोई प्रयास नहीं किया।" उन्होंने इसे पहचानने की कोशिश नहीं की. तो वह कह रहा है कि यह व्यवस्थाविवरण नहीं था क्योंकि व्यवस्थाविवरण बाद में आया था, लेकिन उसने यह पहचानने का प्रयास नहीं किया कि कानून की वह पुस्तक क्या थी। अब बेरी ने जो किया, उसके संबंध में उन्होंने कुछ सुझाव दिये। उन्होंने यह भी महसूस किया कि व्यवस्थाविवरण पोस्टएक्सिलिक है, लेकिन फिर उन्होंने एक थीसिस विकसित की कि योशिय्याह की कानून की किताब को उस पवित्रता संहिता, एच के साथ पहचाना जाना चाहिए, जो काफी हद तक लेविटिकस 17-26 से बना है। उनका लेख आपकी ग्रंथ सूची पृष्ठ दो, जीआर बेरी, "डेट ऑफ ड्यूटेरोनॉमी," *जेबीएल,* 1940 पर है। उनका प्रस्ताव यह है कि एच, ड्यूटेरोनॉमी का अनुसरण करने के बजाय उससे पहले आता है। उन्होंने कहा कि व्यवस्थाविवरण और उस पवित्रता संहिता के बीच संबंध को डी पर एच के प्रभाव के कारण माना जाना चाहिए, न कि इसके विपरीत, एच पर डी के प्रभाव को। उन्होंने बस उन्हें बदल दिया। इसलिए वह व्यवस्थाविवरण के लिए देर की तारीख के निष्कर्ष पर पहुंचे और सुझाव दिया कि शायद एज्रा की कानून की किताब व्यवस्थाविवरण थी। निर्वासन के बाद के समय में जब एज्रा ने कानून की किताब पढ़ी तो वह

शायद व्यवस्थाविवरण थी।

इ। फ्राइड द्वारा बेरी का विरोध अब बेरी का दृष्टिकोण; हम इन विवरणों में नहीं जाएंगे, लेकिन बेरी के दृष्टिकोण का ए. फ्राइड नाम के एक व्यक्ति ने विरोध किया था, "द कोड स्पोकन ऑफ इन II किंग्स 22 एंड 23," *जर्नल बाइबिलिकल लिटरेचर,* खंड 40, 1921 में। मैं जीत गया' इसके बारे में विस्तार से नहीं जाना जा सकता , लेकिन वे व्यवस्थाविवरण के लिए निर्वासन के बाद की तारीख के तीन प्रतिनिधि समर्थक हैं।

तो आप देखिए, आप उस स्थान पर वापस आ गए हैं जहां ड्यूटेरोनॉमी इस जेईडीपी स्रोत सिद्धांत दृष्टिकोण के लिए मुख्य आधार है। यदि व्यवस्थाविवरण की तिथि के बारे में कोई प्रश्न है, तो यह आपके संपूर्ण सिद्धांत को प्रभावित करता है। अब ऐसे कई लोग हैं, और मैंने आपको केवल तीन उदाहरण दिए हैं, आलोचनात्मक विद्वानों का, जो कहेंगे कि व्यवस्थाविवरण बाद में निर्वासन के बाद के समय में होना चाहिए। इसलिए आलोचनात्मक विद्वानों के बीच भी तारीख इतनी सटीक रूप से स्थापित नहीं है।

2. पूर्व 621 ई.पू. व्यवस्थाविवरण की राजशाही तिथि: 5 विद्वान

एक। इवाल्ड: मनश्शे का समय

लेकिन फिर आइए 621 (वह 2) से पहले की तारीख के समर्थकों पर वापस जाएं, लेकिन राजशाही काल के दौरान। मुझे वहां पांच नाम मिले हैं: इवाल्ड, वेस्टफाल, ऑस्ट्रिकर, वेल्च और वॉन रेड। हेनरिक इवाल्ड ने इसकी उत्पत्ति मनश्शे के समय में बताई, जो कि बहुत पहले नहीं है, लगभग 697-642 ईसा पूर्व, या जोशिया द्वारा कानून की पुस्तक की खोज से लगभग बीस साल पहले। इवाल्ड 1800 के दशक के अंत में वेलहाउज़ेन के ही समय में रहते थे।

बी। वेस्टफाल ने हेज़ेकियन तिथि के पक्ष में तर्क दिया [ca. 729 ईसा पूर्व] ए. वेस्टफाल ने

1910 में *द लॉ एंड द प्रोफेट्स* नामक पुस्तक लिखी और कहा कि केवल व्यवस्थाविवरण ही हिजकिय्याह जैसे सुधार को प्रेरित कर सकता था जिसने लगभग 729 ईसा पूर्व शासन करना शुरू किया था, इसलिए उन्हें लगा कि व्यवस्थाविवरण की उत्पत्ति किसके समय हुई थी योशिय्याह से लगभग एक सौ वर्ष पहले हिजकिय्याह और यशायाह की। यशायाह ने हिजकिय्याह के समय में भविष्यवाणी की थी। उन्होंने सोचा, व्यवस्थाविवरण जैसी पुस्तक की रचना के लिए वह उपयुक्त समय था। तो इवाल्ड के साथ, आप मनश्शे में वापस जाएँ, और वेस्टफाल के साथ हिजकिय्याह में वापस जाएँ।

सी। शुतुरमुर्ग - 10 वीं शताब्दी व्यवस्थाविवरण की तिथि

टीएच ऑस्ट्राइकर वहां तीसरा व्यक्ति है; संभवतः इस शीर्षक के अंतर्गत ऑस्ट्रिकर, वेल्च और वॉन रेड संभवतः तीन सबसे महत्वपूर्ण हैं। ऑस्ट्रिकर ने हिजकिय्याह से पहले की तारीख के लिए तर्क दिया; वह लगभग दसवीं सदी में वापस चला जाएगा। अपने दृष्टिकोण के संबंध में, उन्होंने कहा कि योशिय्याह के सुधार ने पूजा की शुद्धि को पूरा किया लेकिन केंद्रीकरण को नहीं। व्यवस्थाविवरण को पूजा के केंद्रीकरण की आवश्यकता नहीं है। अब इसका कुछ महत्व है क्योंकि यदि व्यवस्थाविवरण को पूजा के केंद्रीकरण की आवश्यकता नहीं है तो यह वास्तव में वेलहाउज़ेन की पूरी संरचना को कमजोर कर देता है। ऑस्ट्रिकर का कहना है कि योशिय्याह के सुधार के लिए *कल्टस एइनहाइट की आवश्यकता थी*, न कि *कल्टस रेनहाइट की*। *कल्टस एइनहाइट* सांस्कृतिक एकता है, *कल्टस रेनहाइट* सांस्कृतिक शुद्धता है। इसलिए उनका कहना है कि योशिय्याह का सुधार *कल्टस रीइनहाइट से अधिक था*, इसलिए यह पूजा का केंद्रीकरण नहीं बल्कि पूजा का शुद्धिकरण है। उन्होंने महसूस किया कि योशिय्याह के सुधार में एक मजबूत राजनीतिक चरित्र था। उसे लगता है कि योशिय्याह जो करने की कोशिश कर रहा था वह इसराइल को राजनीतिक और धार्मिक रूप से, असीरियन प्रभुत्व से मुक्त करना था। उन्होंने कहा कि योशिय्याह द्वारा की गई इन सभी बातों का पंथ के केंद्रीकरण से कोई लेना-देना नहीं है। इज़राइल को

असीरियन प्रभुत्व से मुक्त कराने के संबंध में उनके पास कुछ राजनीतिक लक्ष्य थे, और वह जो करना चाहते थे वह राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल करना था लेकिन पूजा का केंद्रीकरण नहीं था। वह कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण स्वयं को अभयारण्यों की बहुलता के विरुद्ध नहीं, बल्कि बहुदेववाद के विरुद्ध निर्देशित करता है।" और निस्संदेह, असीरियन बहुदेववादी थे, और यही मुद्दा है।

हम बाद में और अधिक विस्तार से उस मुद्दे पर वापस आएंगे क्योंकि ऑस्ट्रिकर ने तर्क दिया कि व्यवस्थाविवरण 12:14 में जो वाक्यांश कहता है, वह कई स्थानों पर होता है, लेकिन 12:14 में, जहां यह कहता है, "उस स्थान पर" जिसे प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा और तुम्हारे गोत्रों में से," वह कहता है, इसका बेहतर अनुवाद किया गया है, "किसी भी स्थान में जिसे प्रभु तुम्हारे गोत्रों में से चुनेगा।" अब, हमें उस पर गौर करना होगा, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है कि इस वाक्यांश का अनुवाद कैसे किया जाए। लेकिन यहीं पर उनका कहना है कि व्यवस्थाविवरण 12 पूजा के केंद्रीकरण की मांग नहीं करता है। इसलिए अभयारण्यों की बहुलता हो सकती है, लेकिन व्यवस्थाविवरण ने जिसका विरोध किया वह बुतपरस्त पंथ, बहुदेववाद और पूजा के लिए स्थानों का मनमाना चयन था।

डी। वेल्च: सैमुअल ऑलराइट, एडम वेल्च के समय से व्यवस्थाविवरण , "डी" है। अपनी शीट पर नज़र डालें, मुझे लगता है कि पेज चार के शीर्ष पर उसने लिखा *है व्यवस्थाविवरण संहिता*, 1924। वेल्च पूजा के केंद्रीकरण के प्रश्न के संबंध में ऑस्ट्रिकर के समान ही निष्कर्ष पर पहुंचे। उनका मानना था कि व्यवस्थाविवरण का मूल जोर पूजा स्थलों के चरित्र पर है, संख्या पर नहीं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ड्युटेरोनॉमी की उत्पत्ति सैमुअल के समय से उत्तरी इज़राइल में हुई थी। यह काफी प्रारंभिक, राजशाही-पूर्व की बात है, लेकिन अपने वर्तमान स्वरूप में यह लगभग आठवीं शताब्दी का है। तो इवाल्ड, वेस्टफाल, ऑस्ट्रिकर, वेल्च के साथ, और मैंने अभी तक वॉन राड का उल्लेख नहीं किया है, लेकिन इन सभी लोगों के साथ आप जोशिया के समय की तुलना में उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहे

हैं। लेकिन पूर्व-राजशाही काल तक वापस नहीं और निश्चित रूप से मोज़ेक काल तक भी वापस नहीं।

इ। वॉन रैड के साथ वॉन रैड पर उनके दृष्टिकोण में फॉर्म-क्रिटिकल अध्ययन का प्रभाव आता है, और उनका दृष्टिकोण बल्कि जटिल है। तीन पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं। उनमें से एक मेरे पास इस शीट पर है; पृष्ठ तीन के मध्य में, *व्यवस्थाविवरण में अध्ययन*। यह 1953 में प्रकाशित यह छोटी सी पुस्तक है। लेकिन उन्होंने ड्यूटेरोनॉमी पर एक टिप्पणी भी की, जिसका अनुवाद वेस्टमिंस्टर प्रेस द्वारा प्रकाशित *ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी श्रृंखला में किया गया है।* यानी 1964, पहली बार अंग्रेजी में 1966 में प्रकाशित हुई। उनकी पुस्तक *द प्रॉब्लम ऑफ द हेक्साटेच भी महत्वपूर्ण है*, जो एकत्रित निबंधों का एक खंड है। मूल लेख 1938 में प्रकाशित हुआ था, लेकिन निबंधों का संग्रह 1966 में प्रकाशित हुआ था। इसलिए वे तीन पुस्तकें वॉन रैड के ड्यूटेरोनॉमी के दृष्टिकोण, इसकी तिथि, प्रकृति आदि के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

उनका यह विचार बरकरार है कि व्यवस्थाविवरण योशिय्याह की कानून-पुस्तक है, लेकिन वे कहते हैं, "व्यवस्थाविवरण विकास की एक लंबी और जटिल प्रक्रिया का परिणाम है।" दूसरे शब्दों में , यह कुछ ऐसा नहीं है जो योशिय्याह के समय में लिखा गया था, यह विकास की एक लंबी प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद है। अपने *स्टडीज़ इन ड्यूटेरोनॉमी के पृष्ठ 37* पर वे कहते हैं, “ड्यूटेरोनॉमी इज़राइल के विश्वास के इतिहास में एक निश्चित बिंदु पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है। यह एक पूर्ण, परिपक्व, खूबसूरती से आनुपातिक, धार्मिक रूप से स्पष्ट कार्य के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। इन विशेषताओं के कारण, इसे सभी परिस्थितियों में, एक संबंध में, एक लंबे और बेहद जटिल विकास के अंतिम उत्पाद के रूप में लिया जाना चाहिए। अपेक्षाकृत देर से, यह व्यावहारिक रूप से इज़राइल के विश्वास की संपूर्ण संपत्तियों को एक साथ इकट्ठा करता है, उन्हें पुनः स्थानांतरित करता है और उन्हें धार्मिक रूप से शुद्ध करता है। इसमें परंपराओं के सबसे विविध समूहों को एक-

दूसरे के साथ सामंजस्य बिठाया जाता है और एक साथ पूर्ण और पूर्ण एकता में बांधा जाता है, जिसकी कल्पना की जा सकती है। इस संबंध में, दूसरों की तरह, यह न्यू टेस्टामेंट की किताबों में जॉन के गॉस्पेल से तुलनीय है। यह भी माना जा रहा है कि जॉन के सुसमाचार के पीछे एक लंबा विकास है। पुस्तक के चरित्र के संबंध में उनका यही दृष्टिकोण है।

शेकेम वॉन रेड में वॉन रैड की एम्फ़िक्टोनी अधिक विशिष्ट हो जाती है। उनका कहना है कि, "व्यवस्थाविवरण एक पुनर्स्थापना आंदोलन का उत्पाद है जिसमें शेकेम में याहवे एम्फ़िक्टोनी की पुरानी सांस्कृतिक परंपरा को इज़राइल पर अनिवार्य के रूप में फिर से प्रस्तुत किया गया है।" क्या आपने कभी "एम्फ़िक्टोनी" शब्द के बारे में सुना है? वह इसे एक पुनर्स्थापना आंदोलन कहते हैं, "जिसमें शेकेम में यहोवा की उभयचरता की पुरानी सांस्कृतिक परंपरा को इज़राइल पर अनिवार्य के रूप में फिर से प्रस्तुत किया गया है।" अब, "एम्फ़िक्टोनी" एक केंद्रीय धार्मिक मंदिर के आसपास राजनीतिक इकाइयों का एक संघ है। मुझे लगता है कि यह शब्द और अवधारणा ग्रीक इतिहास से ली गई है। लेकिन लंबे समय से एक सिद्धांत रहा है, वॉन राड इसके एक समर्थक थे, मार्टिन नोथ दूसरे थे, कि इज़राइल का मूल संगठन एक उभयचर क्षेत्र था और इसका केंद्र शेकेम था। यहोशू 24 में, यहोशू पूरे इस्राएल को शकेम में बुलाता है और उस सभा में वाचा का नवीनीकरण किया जाता है। यहोशू ने उन्हें प्रभु की सेवा करने की चुनौती दी और कहा, "जहाँ तक मेरी और मेरे घर की बात है हम प्रभु की सेवा करेंगे" इत्यादि। मार्टिन नोथ और गेरहार्ड वॉन राड जैसे लोगों को लगता है कि इज़राइल के इतिहास में उस समय बहुत सारे विविध समूह थे जो एक साथ आए और यहोवा को अपने देवता के रूप में अपनाया। उभयचरता अपनी सामाजिक संरचना के लिए है - केंद्रीय धार्मिक मंदिर के आसपास बहुत सारे विविध समूह एकत्र हुए। तो वह यहां जो कह रहा है वह यह है, "व्यवस्थाविवरण एक पुनर्स्थापना आंदोलन की प्रक्रिया है जिसमें शेकेम में याहवे एम्फ़िक्टोनी की पुरानी सांस्कृतिक परंपरा को इज़राइल पर अनिवार्य के रूप में फिर से प्रस्तुत किया जाता है।"

वॉन रैड का फॉर्म क्रिटिकल दृष्टिकोण ड्यूटेरोनॉमी को एक कार्बनिक संपूर्ण/एकता के रूप में प्रस्तुत करता है, फिर वॉन रेड ने जो करने की कोशिश की, वह ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक में फॉर्म क्रिटिकल पद्धति को लागू करना था। पुस्तक के चरित्र और पुस्तक की संरचना के बारे में इस सभी गतिरोध और बहस का ब्रेकआउट कुछ ऐसा था जिसने विशेष रूप से उनका ध्यान आकर्षित किया। यदि आप उनके लेख "द प्रॉब्लम ऑफ़ द हेक्साटेच" को देखें, तो वे पृष्ठ 26 पर कहते हैं, "जो कहा गया है उसके प्रकाश में, हमें अब व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को फिर से देखना चाहिए। हम वर्तमान में व्यवस्थाविवरण की समस्या से उत्पन्न कई कठिनाइयों को छोड़ सकते हैं और खुद को एक ऐसे मामले तक सीमित रख सकते हैं जिसे इस पुस्तक की प्रकृति के बारे में सभी विवादों के बावजूद अभी तक विद्वानों द्वारा शायद ही छुआ गया है। हमें व्यवस्थाविवरण के स्वरूप के बारे में क्या कहना है?”

तो वॉन रैड ने सवाल पूछना शुरू कर दिया: हम फॉर्म के साथ क्या करते हैं? क्या भाषणों, कानूनों इत्यादि की उल्लेखनीय श्रृंखला के साथ संपूर्ण पुस्तक की कोई संरचना है? भले ही यह सोचा जाए कि व्यवस्थाविवरण और इसका वर्तमान स्वरूप सीधे धर्मशास्त्रियों के डेस्क से आया है, यह हमें यह पूछने से नहीं रोकता है कि यह किस शैली से संबंधित है। यह बस प्रश्न को और पीछे ले जाता है। यह हमें ड्यूटेरोनोमिक धर्मशास्त्रियों द्वारा प्रयुक्त सामग्री के स्वरूप के इतिहास और विकास पर गौर करने के लिए मजबूर करता है। कोई भी इस धारणा को स्वीकार नहीं कर सकता कि इन लोगों ने एक तदर्थ, इतनी उल्लेखनीय साहित्यिक विधा का निर्माण किया।"

वह आगे बढ़ता है और इस पर कुछ विस्तार से चर्चा करता है। वह कहते हैं, “जाहिर तौर पर रूप आलोचना के दृष्टिकोण से, कोई भी व्यवस्थाविवरण की उत्पत्ति की ऐसी किसी भी तस्वीर को स्वीकार नहीं करेगा। यह इस तथ्य की मान्यता से वर्जित है कि व्यवस्थाविवरण एक जैविक संपूर्ण रूप में है।" वे कहते हैं, रूप में यह एक जैविक समग्रता है। “हम साहित्यिक मानदंडों के आधार पर विभिन्न स्तरों की किसी भी संख्या को अलग कर

सकते हैं, लेकिन रूप के मामले में, विभिन्न घटक एक अविभाज्य एकता बनाते हैं। इस प्रकार व्यवस्थाविवरण के स्वरूप की उत्पत्ति और उद्देश्य के बारे में प्रश्न बेवजह उठाया गया है जैसा कि अब हमारे पास है।" फिर वह पुस्तक की संरचना की रूपरेखा देता है। हम बाद में व्यवस्थाविवरण की संरचना और स्वरूप को देखेंगे।

मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि वॉन रैड कहते हैं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की संरचना की एकता को देखना महत्वपूर्ण है। वह इसे विकास की लंबी प्रक्रिया के अंतिम उत्पाद के रूप में देखते हैं। लेकिन वह इसकी संरचना को इस वाचा नवीनीकरण उत्सव में निहित देखता है जो समय-समय पर शेकेम में आयोजित किया जाता था। यह उस अनुबंध नवीनीकरण के तत्वों को दर्शाता है। आप कह सकते हैं कि यह एक धार्मिक अनुष्ठान है। फिर उन्होंने प्रस्ताव दिया कि यह नवीनीकरण बहुत पहले यहोशू के समय में शुरू हुआ था। वह स्वरूप कैसे सुरक्षित रखा गया? इसे कैसे पारित किया गया? इसकी जड़ें शकेम के इस सांस्कृतिक अनुष्ठान में हैं। उनका प्रस्ताव है कि यह लेवी ही थे जिन्होंने उस पुरानी सांस्कृतिक सामग्री को संरक्षित और विस्तृत किया था। इसलिए अंतिम रूप का श्रेय लेवियों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने राजशाही काल के दौरान बहुत बाद में कानून का प्रचार और शिक्षा दी।

उनकी टिप्पणी के पृष्ठ 26 पर, उनका निष्कर्ष है: "यदि ये विचार अच्छी तरह से आधारित हैं, तो हम मान लेंगे कि उत्तरी इज़राइल के अभयारण्यों में से एक, शायद शेकेम या बेथेल, ड्यूटेरोनॉमी का मूल स्थान होगा, और 621 से पहले की सदी होनी चाहिए इसकी तारीख. 621 से पहले एक सदी से भी पीछे जाने का कोई पर्याप्त कारण नहीं है।" अब वह जो कह रहा है, वह यहां 621 ईसा पूर्व है, लेकिन व्यवस्थाविवरण में विकास की एक लंबी प्रक्रिया थी। यह 621 से एक शताब्दी पहले, 721 में अपने अंतिम रूप में आया था। लेकिन इसकी जड़ें मूल रूप से याहवे की उभयचरता में हैं, जो 621 से पहले कई शताब्दियों में रही होगी। मैं व्यवस्थाविवरण के रूप में वापस आना चाहता हूं क्योंकि यह तेजी से महत्वपूर्ण हो गया है, और अब आपको कुछ अंदाज़ा हो गया होगा कि वॉन रैड प्रश्न को किस प्रकार

देखता है।

3. व्यवस्थाविवरण की पूर्व-राजशाही तिथि लेकिन गैर-मोज़ेक ए। रॉबर्टसन और ब्रिंकर - सैमुअल का समय

अब "3" बहुत जल्दी, "पूर्व-राजशाही डेटिंग लेकिन गैर-मोज़ेक।" दो नाम: एडवर्ड रॉबर्टसन और आर. ब्रिंकर। एडवर्ड रॉबर्टस्टन ने 1950 में *द ओल्ड टेस्टामेंट प्रॉब्लम लिखी* थी, और उस पुस्तक में वे कहते हैं, "इब्रानियों ने फिलिस्तीन में एक संगठित समुदाय के रूप में प्रवेश किया, जिसके पास कानून का केंद्र था जिसमें डिकालॉग और शायद वाचा की पुस्तक शामिल थी। निपटान और राजशाही के उदय के बीच, यह समुदाय विकेंद्रीकृत हो गया और कई धार्मिक समुदायों में विभाजित हो गया, जिनमें से प्रत्येक का अपना स्वतंत्र अभयारण्य था। इन अभयारण्यों में अलग-अलग विचारों से संबंधित परंपराएं और कानून विकसित हुए। जब लोग एक राजा के अधीन फिर से एकजुट हो गए, तो धार्मिक एकता लाना आवश्यक था। इस उद्देश्य के लिए, सैमुअल के मार्गदर्शन और तत्काल पर्यवेक्षण के तहत अभयारण्यों के कानून कोड की उचित जांच और समीक्षा के बाद संहिताकरण सहित कानून का सारांश तैयार किया गया था। यह नया कोड व्यवस्थाविवरण की पुस्तक थी और इसे केंद्रीकृत प्रशासन के मानक कानून कोड के रूप में डिज़ाइन किया गया था। एक राजा के अधीन जनजातियों के संघ ने पूजा के केंद्रीकरण को वांछनीय और संभव बना दिया।

तो यह एक बहुत दिलचस्प सिद्धांत है - बहुत काल्पनिक - लेकिन आप उसकी सामान्य थीसिस देख सकते हैं। इस भूमि पर सभी प्रकार की विभिन्न कानून परंपराएँ विकसित हुईं। सैमुअल के नेतृत्व में (सैमुअल वह था जिसने पहले दो राजाओं, शाऊल और डेविड का अभिषेक किया था) उन परंपराओं को एकीकृत किया गया था, और इस संहिताकरण के परिणामस्वरूप, मुझे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में एकता मिलती है। उन्होंने इसका श्रेय सैमुअल को दिया, इसलिए यह पूर्व-राजशाही और गैर-मोज़ेक है, लेकिन यह बहुत काल्पनिक है।

बी। ब्रिंकर: प्रारंभिक इज़राइल में अभयारण्यों का प्रभाव: केंद्रीकरण नहीं बल्कि शुद्धिकरण

आर. ब्रिंकर, "बी," "प्रारंभिक इज़राइल में अभयारण्यों का प्रभाव," 1946 में लिखा गया था। यह रॉबर्टसन के समान स्थिति है। उन्होंने तर्क दिया कि केंद्रीकरण पर जोर नहीं दिया गया, बल्कि शुद्धिकरण पर जोर दिया गया। तो आप देखिए, आप उस मोड़ पर वापस आ गए हैं। यह वही चीज़ है जिसके बारे में होल्शर ने बात की थी। क्या व्यवस्थाविवरण को वास्तव में केंद्रीकरण की आवश्यकता है, या इसका जोर शुद्धिकरण पर अधिक है? ब्रिंकर ने रॉबर्टसन के समान रुख अपनाया कि सैमुअल वास्तव में ड्यूटेरोनॉमी के लिए जिम्मेदार था। केंद्रीकरण पर जोर नहीं दिया गया है; तनाव मूर्तिपूजा और पूजा की शुद्धता के साथ तालमेल के खिलाफ चेतावनी दे रहा है।

4. मोज़ेक दिनांक ठीक है, यह हमें "4" पर लाता है और मुझे लगता है कि मैं रुक जाऊंगा; दस बज गये हैं. मैं मोज़ेक तिथियों के कुछ समर्थकों के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है और चर्चा के इस पूरे इतिहास में, हमेशा उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग रहे हैं जो मोज़ेक तिथि के लिए तर्क देते हैं, और ये उसके कुछ प्रतिनिधि हैं। कुछ वर्तमान लोग हैं जो वर्तमान में इस बहस में शामिल हैं और बहस पर वास्तव में नए दृष्टिकोण लाते हैं जो व्यवस्थाविवरण की उत्पत्ति के लिए मोज़ेक स्थिति को प्रमाणित करने में मदद करते हैं। इसलिए हम बाद में उसमें आगे बढ़ना चाहते हैं।

एम्फिक्टयोनी की व्याख्या एम्फिक्टयोनी पर एक और टिप्पणी। यह एक केंद्रीय धार्मिक मंदिर या देवता के आसपास राजनीतिक इकाइयों का एक संघ है। तो इन महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों से इसे इज़राइल पर लागू करने का विचार यह है कि इनमें से अधिकांश लोग कहेंगे कि इज़राइल भूमि पर कब्ज़ा करने के लिए मिस्र से एक बाधा के रूप में नहीं आया था, लेकिन हो सकता है कि कोई छोटा तत्व हो जिसने ऐसा किया हो . इज़राइल में कई अन्य विविध तत्व थे, और ये सभी तत्व शेकेम में अभयारण्य के आसपास देवता याहवे के

साथ एक साथ आए और कहा, "प्रभु हमारा भगवान होगा," और यही बात उन्हें एक साथ खींचती थी, न कि उनकी जातीय पृष्ठभूमि।

ठीक है, अगले सप्ताह मिलते हैं।

हेले पोमेरॉय द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया